Question : मीमांसा दर्शन के अनुसार कर्म सिद्धान्त (Theory of Karma) की व्याख्या :—

Answer :— मीमांसा दर्शन में कर्म पर इतना अधिक जोर दिया गया है कि इसे 'कर्मकाण्ड' भी कहा जाता है। जहाँ वेदान्त दर्शन में ज्ञान विषयक समस्याओं पर विशेष ध्यान दिया गया है वहाँ मीमांसा दर्शन में कर्म तथा कर्मफल से संबद्ध प्रश्नों पर विशेष रूप से विचार किया गया है।

मीमांसा दर्शन में कर्म संबंधी समस्याओं का विस्तृत विवेचन होने के कई कारण हैं:—

1 रीति-रिवाज और कर्म के ढंग यंत्रवत होने के कारण लोगों का ध्यान खींचने में असमर्थ सिद्ध हो रहे थे।

2 लोगों को ऐसा विश्वास होने लगा था कि रीति-रिवाजों तथा यज्ञों का कोई महत्व नहीं है वेदों-पुराणों तथा यज्ञों पर से विश्वास लोगों का (ध्यान एवं विश्वास) उठने लगा था। इन्हीं सब कारणों से मीमांसकों के लिए कर्म-फल-सिद्धान्त का विवेचन करना आवश्यक हो गया। कर्मों के ढंग में उत्पन्न विकारों को दूर करने के लिए मीमांसकों ने अथक प्रयास किया है। वैदिक बातों को बचाये रखने के लिए उन्होंने कर्मों के स्वरूप एवं महत्व पर विस्तृत प्रकाश डाला है।

HE THAT IS GOOD FOR MAKING EXCUSES IS SELDOM GOOD FOR ANYTHING ELSE

Scanned with CamScanner

मीमांसकों का कहना है कि कर्म ही व्यक्ति को बन्धन में डालते हैं। और कर्म ही व्यक्ति को बन्धन मुक्त करके मोक्ष भी दिलाते हैं। अशुभ तथा अनुचित कर्म करने से ही व्यक्ति बन्धनग्रस्त हो जाता है। मोह, लोभ, वासना आदि से प्रेरित होकर किये गये कर्म व्यक्ति को बंधन में डालते हैं। बन्धन से मुक्ति दिलाने का कार्य भी कर्म ही करते हैं। शुभ और उचित कर्मों के द्वारा व्यक्ति मोक्ष (Liberation) की प्राप्ति कर सकता है। यज्ञ, बलि, हवन, तथा अन्य उचित कर्म मोक्ष का दरवाजा खोलते हैं।

अब प्रश्न है कि शुभ या उचित कर्म कौन से हैं? इसी प्रकार अनुचित या अशुभ कर्म किसे कहते हैं?

इस संदर्भ में मीमांसा का उत्तर है कि धर्म के अनुसार कर्म ही उचित या शुभ हैं तथा धर्म के विरुद्ध किये गये कर्म अनुचित या अशुभ हैं।

अब प्रश्न है कि धर्म क्या है? या वेद में धर्म का ज्ञान कैसे मिलेगा?

मीमांसा दर्शन ईश्वर को न मानकर वेदों को मानता है। वेद में धर्म तथा अधर्म का विचार किया गया है। वैदिक आदेश का पालन करने

Scanned with CamScanner

वाले कर्म उचित या शुभ है और इन का उल्लंघन करने वाले कर्म अनुचित या अशुभ हैं। अर्थात वेदों का अनुसरण करना धर्म है तथा इनकी उपेक्षा करना अधर्म या अशुभ है। इस प्रकार वैदिक आदेश ही किसी कर्म के औचित्य या अनौचित्य को निर्धारित करते हैं।

कर्म के प्रकार
(Kinds of Karma)

मीमांसा दर्शन के अनुसार कर्म पाँच प्रकार के होते हैं जो निम्नवत हैं :-

1. नित्य कर्म
2. नैमित्तिक कर्म
3. काम्य कर्म
4. निषिद्ध कर्म और
5. प्रायश्चित कर्म।

1. नित्य कर्म :- नित्य कर्म वे हैं जिन्हें प्रतिदिन व्यक्ति को करना पड़ता है जैसे - संध्या, पूजा आदि।

2. नैमित्तिक कर्म : विशेष अवसरों पर किये जाने वाले कर्म ही नैमित्तिक कहे जाते हैं। जैसे: विवाह, जन्म, मृत्यु आदि के अवसरों पर किये जाने वाले कर्म नैमित्तिक कर्म हैं।

3. काम्य कर्म : इच्छा विशेष की पूर्ति या फल

की प्राप्ति के लिए जो कर्म किये जाते हैं उन्हें 'काम्य कर्म' कहते हैं। जैसे :- पुत्रप्राप्ति, यश-प्राप्ति, धन प्राप्ति, स्वर्गप्राप्ति आदि के लिए किये जाने वाले यज्ञ, हवन, बलि या अन्य कर्म / इन

4 निषिद्ध कर्म : कुछ कर्म ऐसे हैं जिनके करने की मनाही है। मीमांसा इन कर्मों को नहीं करने का आदेश देती है। ~~इन कर्मों के नहीं करने से कोई~~

5 प्रायश्चित कर्म : निषिद्ध एवं अनुचित कर्मों के करने पर व्यक्ति को प्रायश्चित करना पड़ता है। प्रायश्चित से बुरे कर्मों के कुप्रभाव कम हो जाते हैं। इसलिए मीमांसा में प्रायश्चित कर्मों का महत्व है।

मीमांसकों का कहना है कि कर्म हमें इसलिए करना चाहिए क्योंकि वेदों का ऐसा आदेश है। किसी इच्छा की पूर्ति या फल की प्राप्ति के लिए कर्म नहीं करना है कर्म तो इसलिए किया जाय क्योंकि वेदों में ऐसा कहा गया है। वेदों का कहना है कि "कर्म करो क्योंकि कर्म ही कर्त्तव्य है।"

प्रभाकर ने तो वैदिक कर्म का विश्लेषण करके यह बतलाया है कि फल की इच्छा या किसी लक्ष्य की पूर्ति की कामना से बढ़कर कर्त्तव्य की भावना है। कर्म कर्त्तव्य के रूप में करना चाहिए न कि फलविशेष की प्राप्ति के लिए। परन्तु यह उचित

Scanned with CamScanner

नहीं जानता। यहाँ मीमांसा और Kant के विचारों में कुछ समानता है। Kant भी मानते हैं कि कर्म कर्तव्य समझ कर करना चाहिए इसलिए Kant ने कर्तव्य कर्तव्य के लिए (Duty for Duty Sake) कहा।

मीमांसा कर्म को कर्तव्य के रूप में करने की सलाह देती है। इनके अनुरूप कर्तव्य का फल देखा नहीं जाता बल्कि फल मिलता रहता है। मीमांसक पुण्य का संचय करते हैं। जब मनुष्य (व्यक्ति) को पुण्य की मात्रा अधिक हो जाती है तो व्यक्ति बन्धन से छुटकारा पा लेता है। रीति-रिवाज एवं नैतिक कर्मों को करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। प्रभाकर और कुमारिल भट्ट दोनों ने ही स्वर्ग की प्राप्ति को ही कर्तव्य का लक्ष्य बतलाया है। बाद के मीमांसकों ने स्वर्ग के स्थान पर मोक्ष (Salvation) को कर्मों का चरम लक्ष्य बतलाया है। शुभ और नैतिक कर्म व्यक्ति के पूर्व-संस्कारों को नष्ट करके उसे जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त करते हैं। मीमांसकों ने प्रत्येक कर्म का फल बतलाया है। उनका कहना है कि इन कर्मों का परम-लक्ष्य स्वर्ग या मोक्ष की प्राप्ति है।

Scanned with CamScanner

27 FEBRUARY 2016 SATURDAY
WK 09 (058-308)

मीमांसा पुनर्जन्म (Rebirth) में विश्वास करती है। इसके अनुसार प्रत्येक किया जाने वाला कर्म एक अदृष्ट शक्ति उत्पन्न करता है जिसे 'अपूर्व' कहते हैं। अपूर्व = सिद्धान्त के आधार पर ही जीव को सुख या दुःख भोगने पड़ते हैं। कर्म की दृष्टि से अपूर्व 'कर्म सिद्धान्त' कहा जाता है। अपूर्व सिद्धान्त का कहना है कि प्रत्येक कार्य में एक शक्ति निहित है जिससे फल निकलता है। जिस प्रकार बीज में वृक्ष उत्पन्न करने की शक्ति है, उसी प्रकार प्रत्येक कर्म में फल उत्पन्न करने की शक्ति है। बाधाओं के कारण कोई कर्म भले ही फल देने में असमर्थ हो, परन्तु बाधाओं के हटते ही वह फल देने लगता है। अपूर्व स्वसंचालित है। इसे संचालित करने के लिए ईश्वर की आवश्यकता नहीं पड़ती। इस प्रकार, मीमांसा 'अपूर्व सिद्धान्त' के आधार पर कर्मफल की व्याख्या प्रस्तुत करती है।

आलोचना :—

28 SUNDAY

शंकर ने मीमांसा के अपूर्व-सिद्धान्त की आलोचना की है। शंकर के

SOME PEOPLE ALWAYS LOOK FOR THE NEGATIVE

Scanned with CamScanner

अनुसार 'अपूर्व' अचेतन होने के कारण किसी आध्यात्मिक सत्ता (अर्थात ईश्वर) के अभाव में कर्मफल प्रदान नहीं कर सकता। इसे स्वसंचालित नहीं कहीं जा सकता। इस प्रकार, 'अपूर्व सिद्धान्त' कर्मफल की व्याख्या नहीं कर सकता।